"बेपरवाह"

• हुक्मी हुक्म चलाऐ राहु । नानक विगसै बेपरवाह । (जपुजी-3)

अर्थः- हुक्म वाले रब का हुक्म ही संसार की कार वाला रास्ता चला रहा है । हे नानक ! वह निरंकार सदा बेपरवाह है, प्रसंन्न है । भाव, हालाकि, ईश्वर हर वक्त संसार के बेअंत जीवों को अटूट पदार्थ व रिज़क दे रहा है, पर इतने बड़े कार्य में उसे कोई घबराहट परेशानी नहीं हो रही । वह सदा ही प्रसंन्न अवस्था में है । उसे इतने बड़े पसारे में खचित नहीं होना पड़ता । उसकी एक हुक्म रूप सत्ता ही सारे व्यवहार को निबाह रही है ।

• जल ते थल कर - थल ते कुआँ - कूप ते मेर करावै । धरती ते आकास चढ़ावै - चढ़े अकास गिरावै ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा की खेल आश्चर्यजनक है पानी भरी जगहों को रेतीला बना देता है, रेतीली जगहों में कुआं बना देता है, और कूँओं की जगह से पहाड़ कर देता है । ज़मीन पर पड़े हुए को आसमान पर चढ़ा देता है, आसमान पर चढ़े हुए को नीचे गिरा देता है ।

भेखारी ते राज करावै - राजा ते भेखारी । खल मूरख ते पडित करबो - पडित ते मुगधारी ।

अर्थः- भिखारी को राजा बना के उस से राज करवाता है, राजे को मँगता बना देता है महामूर्ख से विद्वान बना देता है और पण्डित को मूर्ख कर देता है ।

नारी ते जो पुरख करावै - पुरखन ते जो नारी । कह कबीर साधू को प्रीतम - तिस मूरत बलिहारी । (कबीर- 1252)

अर्थः- जो प्रभु स्त्री से मर्द पैदा करता है, मर्दों की बिंद से स्त्रीयां पैदा कर देता है, हे कबीर ! कह मैं उस सुंदर स्वरूप से सदके जाता हूँ, वह संतजनों का प्यारा है ।

• आपे भाडे साजिअन - आपे पूरण देइ । इकन्ही दुध समाईऐ - इक चुल्है रहन्हि चड़े ।

अर्थः- प्रभु ने जीवों के शरीर रूपी बर्तन खुद ही बनाए हैं, और वह जो कुछ इनमें डालता है, भाव, जो दुख - सुख इनकी किस्मत में देता है । कई बर्तनों में दूध पड़ा रहता है और कई बिचारे चूल्हे पर ही तपते रहते हैं अर्थात, कई जीवों के भाग्यों में सुख और बढ़िया - बढ़िया पदार्थ हैं, और कई जीव सदा कष्ट ही सहते हैं ।

इक निहाली पै सवन्हि – इक उपर रहन खड़े । तिन्हा सवारे नानका – जिन कउ नदर करे । (1-475)

अर्थः- अनेक कई भाग्यशाली गद्दों पे बेफिक्र हो के सोते हैं, कई बिचारे उनकी रक्षा आदि सेवा के लिए उनकी हजूरी में खड़े रहते हैं । पर, हे नानक ! जिस पे मेहर की नजर करता है, उनको सँवारता है भाव, उनका जीवन सुधारता है ।

• दाती साहिब संदीआ – किआ चलै तिस नाल । इक जागदे ना लहंनि – इकना सुतिआ देइ उठाल । (1-1384)

अर्थः- बख्शिशें, मालिक की अपनी हैं । उस मालिक के साथ किसी का क्या जोर चल सकता है ? कई अमृत बेला में जागते हुए भी ये बख्शिशें नहीं ले सकते, कई भाग्यशालियों को सोए हुओं को वह खुद जगा देता है भाव, कई अमृत बेला में जागते हुए भी किसी अहंकार आदि रूप माया में सोए रह जाते हैं, और कई गाफिलों को मेहर कर के खुद सूझ दे देता है ।

• अमर बेपरवाह है – तिस नाल सिआणप न चलई – न हुजत करणी जाई ।

अर्थः- परमात्मा अटल है, बे – मुथाज, उसके साथ कोई चालाकी नहीं चल सकती, ना ही उसके हुक्म के आगे कोई दलील पेश की जा सकती है गुरमुख मनुष्य स्वै – भाव छोड़ के उसकी शरण पड़ता है, उसकी रज़ा के आगे सिर झुकाता है ।

आप छोड सरणाई पवै – मंन लए रजाई । गुरमुख जम डंड न लगई – हउमै विचहु जाई । नानक सेवक सोई आखीऐ – ज सच रहै लिव लाई । (3-1251)

अर्थः- तभी तो गुरमुख को जमराज प्रताड़ित नहीं कर सकता, उसके मन में से अहंकार दूर हो जाता है । हे नानक ! प्रभु का सेवक उसको कहा जा सकता है जो स्वै - भाव छोड़ के सच्चे प्रभु में ध्यान जोड़े रखता है ।

• अगम निगम सतिगुर दिखाइआ । कर किरपा अपनै घर आइआ । अंजन माह निरंजन जाता - जिन कउ नदर तुमारी जीउ ।

अर्थः- हे जोगी ! यह निश्चय कि 'आपण धारी जीउ' यही है हमारे वास्ते 'अगम निगम' प्रभु ने कृपा करके गुरु के द्वारा जिस मनुष्य को यह 'अगम निगम' दिखा दिया, वह मनुष्य अपने असल घर में आ टिकता है । हे प्रभु ! जिस पर तेरी मेहर की निगाह होती है, वह मनुष्य इस माया के पसारे में तुझ निर्लिप को बसता हुआ पहचान लेते हैं ।

गुरमुख होवै सो तत पाऐ - आपणा आप विचहु गवाए । सतिगुर बाझहु सभ धंध कमावै - वेखहु मन वीचारी जीउ ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के सन्मुख होता है, वह यह अस्लियत पा लेता है, वह मनुष्य अपने अंदर से स्वै भाव दूर कर देता है । हे भाई ! अपने मन में विचार कर के देख ले कि गुरु की शरण पड़े बिना हरेक जीव माया के मोह में फसने वाली दौड़ - भाग ही कर रहा है ।

इक भ्रम भूले फिरह अहंकारी । इकना गुरमुख हउमै मारी । सचै सबद रते बैरागी - होर भरम भुले गावारी जीउ ।

अर्थः- हे भाई ! कई ऐसे हैं जो भुलेखे में पड़ कर गलत रास्ते पर पड़े हुए अपने इस गलत त्याग पर ही मान करते फिरते हैं । कई ऐसे हैं जिन्होंने गुरु की शरण पड़ कर अपने अंदर से अहंकार को दूर कर लिया है

। हे भाई ! असल बैरागी वह हैं जो सदा - स्थिर प्रभु की महिमा की वाणी में रंगे हुए हैं, बाकी मूर्ख अपने त्याग के भुलेखे में गलत रास्ते पर पड़े हुए हैं ।

गुरमुख जिनी नाम न पाइआ । मनमुख बिरथा जनम गवाइआ । अगै विण नावै को बेली नाही । बूझै गुर बीचारी जीउ ।

अर्थः- हे भाई ! जिन मनुष्यों ने गुरु की शरण पड़ कर परमात्मा का नाम प्राप्त नहीं किया, उन मन के मुरीदों ने अपनी जिंदगी व्यर्थ गवा ली है । हे भाई ! परलोक में परमात्मा के नाम के बिना और कोई मददगार नहीं है । पर इस बात को गुरु के शब्द के विचार के द्वारा ही कोई विरला मनुष्य समझता है ।

अमृत नाम सदा सुख दाता । गुर पूरै जुग चारे जाता । जिस तू देवह सोई पाए - नानक तत बीचारी जीउ । (3-1016)

अर्थः- हे नानक ! कह हे प्रभु ! तेरा आत्मिक जीवन देने वाला नाम सदा आनंद देने वाला है । सदा से पूरे गुरु के द्वारा ही तेरे इस नाम से सांझ पड़ती आ रही है । हे प्रभु ! वही मनुष्य तेरा नाम प्राप्त करता है जिसको तू स्वयं ये दात देता है । वही मनुष्य असल जीवन भेद को समझने योग्य होता है ।

- कोट ब्रह्माण्ड ठाकुर को सुआमी - सरब जिआं का दाता रे । (5-612)

अर्थः- हे भाई ! मैं मूर्ख ने उस परमात्मा का एक भी उपकार नहीं समझा जो करोड़ों ब्रहमण्डों का पालनहार मालिक है, जो सारे जीवों को रिजक आदि देने वाला दाता है ।

• एको तखत एको पातिसाह । सरबी थाई बेपरवाह । तिसका किआ त्रिभवण सार । ओहु अगम अगोचर एकंकार । (1-1188)

अर्थः- जो मनुष्य गुरु के शब्द में जुड़ता है उसे यकीन बन जाता है कि सारे जगत का मालिक परमात्मा ही सदा - स्थिर एक पातशाह है और उसी का ही सदा स्थिर रहने वाला एक तख़्त है, वह पातशाह सब जगहों में व्यापक है सारे जगत की कार चलाता हुआ भी वह सदा बेफिक्र रहता है । सारा जगत उसी प्रभु का बनाया हुआ है, वही तीनों भवनों का मूल है पर वह अपहुँच है मनुष्य की ज्ञान - इंद्रियों की उस तक पहुँच नहीं हो सकती हर जगह वह स्वयं ही स्वयं है ।

• जेता समुंद सागर नीर भरिआ - तेते अउगण हमारे । दइआ करहु - किछु मिहर उपावहु - डुबदे पत्थर तारे । (1-156)

अर्थः- हे मेरे साहिब ! जैसे अनमापे, अथाह पानी के साथ समुंदर भरा हुआ है, वैसे ही हम जीवों के अनगिनत ही अवगुण हैं । हम इन्हें धो सकने में अस्मर्थ हैं तू खुद ही दया करके मेहर कर तू तो डूबते पत्थरों को भी उबार सकता है ।

• आपे साजे करे आप - जाई भि रखै आप । तिस विच जंत उपाइ कै - देखै थाप उथाप । किस नो कहीऐ नानका - सभ किछु आपे आप । (2-475)

अर्थः- प्रभु स्वयं ही सृष्टि को पैदा करता है, स्वयं ही इसे सजाता है, सृष्टि की संभाल भी खुद ही करता है, इस सृष्टि में जीवों को पैदा करके देखता है, खुद ही टिकाता है खुद ही गिराता है । हे नानक ! उसके बिना किसी और के आगे फरियाद नहीं हो सकती, वह खुद सब कुछ करने के समर्थ है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं – गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"